भ्रातुः क्रोधाग्निना वृतः IV. 31.13b
,, पद्मविशालाक्षम् II. 98.7c
,, पर्णकुटीं श्रीमान् ,, 99.4c
,, पुत्रमवस्थितम् VI. 46.9d
,, प्रियकरं हितम् II. 32.1b
,, प्रियहिते रतः IV. 31.10b
,, ,, ,, VI. 28.23b
भ्रातुरन्तःपुरं सौम्यम् IV. 26.22a
भ्रातुरर्थाय लक्ष्मणम् II. 51.1b
भ्रातुरर्थे महाबाहो VI. 62.19a
भ्रातुरागमनं श्रुत्वा ,, 127.19c
भ्रातुराज्ञाय शासनम् III. 45.4d
,, ,, VI. 60.90b
भ्रातुरादेशमाज्ञाय V. 67.21c
भ्रातुरादेशमादाय ,, 38.44c
भ्रातुरानयने यातम् II. 83.18c
भ्रातुरालम्ब्य मे स्वरम् III. 59.12b
भ्रातुरुत्तरमब्रवीत् V. 53.1d
भ्रातुरैश्वैर्ययुक्तस्य VII. 56.23a
भ्रातुर्जटायुषस्तस्य IV. 24.36a
भ्रातुर्ज्येष्ठस्य नित्यशः I. 18.29b
,, यो भार्याम् IV. 55.3a
भ्रातुर्दर्शनलालसाम् II. 92.9b
भ्रातुर्दर्शयताद्भुतम् III. 5.12d
भ्रातुर्निधनसंश्रितम् ,, 11.65b
भ्रातुर्भयार्तमासीनम् V. 35.26a
भ्रातुर्यदर्थरहितम् II. 104.6c
भ्रातुर्युधि पराभवम् VI. 60.78b
भ्रातुर्वचनमाज्ञाय II. 56.24a
भ्रातुर्वधं राम विरोचयेत IV. 24.9b
भ्रातुर्वधात्त्वाद्वधादिवेन्द्रः ,, 24.13d
भ्रातुर्वधेनाप्रतिमेन तेपे ,, 24.1d
भ्रातुर्वधो मेऽनुमतः पुरस्तात् ,, 24.6b
भ्रातुर्वर्तसि भार्यायाम् ,, 18.18c
भ्रातुर्ववन्दे चरणौ VI. 62.8c
भ्रातुर्वाक्येन विस्मितः II. 111.27b
भ्रातुर्विजयसंश्रितान् VI. 10.8d
भ्रातुर्विषादात्त्वरितोऽतिदीनः IV. 30.15c
भ्रातुर्वैरविमोक्षणे ,, 58.3d
भ्रातुर्वैश्रवणस्य च VII. 40.10d
,, ते ,, 26.32d
,, मे III. 55.29d
भ्रातुर्व्यसनसंतप्तम् IV. 34.2c
भ्रातुर्व्यसनसंतप्तः ,, 31.33c
भ्रातुर्हितमनन्तरम् VI. 109.20d
भ्रातुः शत्रोर्विशेषतः IV. 16.2b
,, शिष्यस्य दासस्य II. 101.12c
,, शोकविषार्दितः IV. 46.6d
,, शृणु समादेशम् V. 51.3a
भ्रातुश्च जयतां वर IV. 38.26b
भ्रातुश्चारित्रशङ्कया II. 72.43b
भ्रातुः स भवनं गच्छन् VI. 60.94c
,, ,, ,, गत्वा ,, 62.5a
,, समीपे शोकार्ता III. 20.24a
,, ,, ,, ,, 21.22a
भ्रातुस्तस्य चिकिर्षितम् VII. 14.6b
भ्रातुस्तु मेषरूपस्य III. 11.64c
भ्रातुस्ते भ्रातृवत्सल VII. 46.16d
,, राक्षसाधिप VI. 27.22d
,, वदतः पुत्र II. 21.21a
भ्रातुस्त्वमसि शत्रुवत् III. 45.5d
भ्रातृगुप्त्यर्थमत्यन्तम् II. 86.2c
भ्रातृजं प्लवगेश्वरः VI. 76.63d
भ्रातृगौरवयन्त्रितः IV. 9.24b
भ्रातृतुल्योऽधिकोऽपि वा VII. 9.45b
भ्रातृत्वमायभावश्च IV. 24.12a
भ्रातृत्वमुपसंपन्नौ VII. 34.42c
भ्रातृपुत्रसमौ चापि II. 26.33a
भ्रातृपुत्रेण चैतेन VI. 50.16a
भ्रातृभार्याभिमर्शेऽस्मिन् IV. 18.20c

मन्त्रपूतं जलं तदा „ 73.28b
मन्त्रपूतेन हविषा IV. 26.30c
मन्त्रपूतैर्महाभागैः I. 39.13a
मन्त्रमूलं च विजयम् VI. 6.5a
मन्त्रयध्वं विनिर्णये „ 37.5b
मन्त्रयन्प्रेक्षसे तु किम् IV. 18.16d
मन्त्रयन्रामवृद्ध्यर्थम् VI. 128.24c
मन्त्रयामासुरर्थवत् „ „ 23d
मन्त्रयित्वा च लक्ष्मण VII. 91.3b
„ ततश्चक्रे II. 4.1c
„ ततोऽन्योन्यम् VII. 19.4c
„ तु दुर्धर्षम् VI. 31.5a
„ मनस्विनौ II. 55.12b
„ विमृश्य च VI. 36.16b
„ स धर्मिष्ठैः III. 37.23a
„ न नैगमैः II. 59.19b
मन्त्रयेते ध्रुवं किंचित् „ 16.15c
मन्त्रये नापि मातरम् „ 75.2d
मन्त्रवच्च यथान्यायम् I. 30.10a
मन्त्रवत्कारयामास II. 5.11c
मन्त्रवत्कृतमङ्गला „ 20.15d
मन्त्रवन्मन्त्रकोविदाः I. 60.9d
मन्त्रवन्मन्त्रपूजितम् III. 74.22f
मन्त्रविद्विजयैषिणी V. 16.12b
मन्त्रविन्मन्त्रकोविदम् II. 5.4b
मन्त्रविन्मन्त्रकोविदाः „ 106.26d
मन्त्रवेदविदो विप्रान् VI. 10.9c
मन्त्रसङ्घहुतोऽप्यग्निः „ 10.15c
मन्त्रसंवरणे शक्ताः I. 7.19a
मन्त्रस्त्रिभिर्हि संयुक्तः VI. 6.7a
मन्त्रस्यापरिरक्षणम् II. 100.66d
मन्त्रहोमजपानि च „ 33.20d
मन्त्रहोमैर्महात्मानः VII. 57.18c
मन्त्रे कृत्वा प्रसुप्तोऽयम् VI. 60.17c
„ चामित्रकर्शनः VII. 98.12d
„ तु वः प्रदास्यामि „ 6.29c
„ मन्त्रयसे बुध II. 100.71d
मन्त्रः प्रस्तूयतामिह VI. 4.99b
„ सोऽधम उच्यते „ 6.14d
मन्त्रान्रक्षोगृहेषु वै V. 4.13b
मन्त्रान्सत्रावसानिकान् II. 56.29d
मन्त्राश्चर्षिमुखच्युताः „ 25.24b
मन्त्राह्वानैर्यथार्हतः I. 14.9b
मन्त्रिणश्च तथापरे „ 7.4d
„ यथामुख्याः VI. 11.25a
मन्त्रिणश्चैव तान्सर्वान् VII. 63.11c
मन्त्रिणश्चैवमब्रवीत् I. 68.14d
मन्त्रिणश्चैव संमतान् IV. 10.12d
मन्त्रिणस्तानवस्थाप्य II. 90.3c
मन्त्रिणस्तानुपाह्वयत् VII. 74.2b
मन्त्रिणस्तानुवाच ह VI. 36.19d
मन्त्रिणस्तान्नराधिपः I. 12.22b
मन्त्रिणस्तु नरेन्द्रस्य „ 68.19a
मन्त्रिणः कैकयीसुत II. 100.27d
„ प्रतिपूजिताः I. 8.19d
„ प्रत्यपूजयन् „ 12.20b
„ शीघ्रमायान्तु VI. 31.3a
„ शृणुयुस्तथा II. 111.24d
„ सपुरोहिताः „ 91.37b
„ „ „ VII. 37.15b
„ समुपानीय „ 106.5c
मन्त्रिणामनवेक्षकम् IV. 29.5d
मन्त्रिणामर्थनिर्णयः VI. 6.13b
मन्त्रिणावर्थधर्मयोः IV. 31.43b
मन्त्रिणां दर्शनं ययौ VI. 32.38d
„ वचनं श्रुत्वा II. 115.7a
मन्त्रिणोऽथार्जुनस्य ते VII. 32.27d
मन्त्रिणो नैगमाश्चैव „ 74.6a
„ बाढमित्याहुः I. 68.18a
„ भृत्यवर्गाश्च VII. 109.13a

महावातसमुद्भुतम् II. 30.13a
महावानररक्षिता VI. 24.19b
महावारणसंनिभाः „ 42.19d
महाविघ्नः प्रवृत्तोऽयम् I. 61.2a
महाविटपधारिणः III. 73.8d
महाविटपमङ्गदः VI. 70.5d
महाविमर्दं समरे „ 76.76a
महाविमानोपमवेश्मसंयुतम् II. 15.48b
महाविषा तेन हतोऽस्मि मोहात् II. 12.105d
महावीरस्य धृतिमान् I. 71.7c
महावीरः प्रतापवान् „ „ 7b
महावीर्यगुणोन्नतम् III. 37.3b
महावीर्यपराक्रमम् VI. 36.20b
महावीर्यस्य दक्षस्य „ 111.80c
महावीर्यं महाद्युतिम् „ 110.6b
महावीर्यं महाप्रभम् VII. 61.6b
„ महाबलम् I. 16.11d
महावीर्या निशाचराः VII. 1.23d
महावीर्यैर्महाबलः VII. 27.31d
महावीर्यो महातेजाः I. 70.35a
„ महाभुजः II. 61.21b
महावृक्षमरिंदमः VI. 86.18d
महावृक्षं महाशाखम् VI. 70.6c
महावृत्त महायशः II. 112.5b
महावृन्दमिति स्मृतम् VI. 28.35b
महावृन्दसहस्राणाम् „ 28.35c
महावृन्दसहस्रेण „ 28.39a
महावेगं महानादम् „ 99.15c
महावेगा दुरासदाः IV. 54.19d
महावेगैः सुतीक्ष्णाग्रैः VI. 99.29c
महावेगोऽभ्युपागमत् V. 57.14b
महावेगो महाकपिः V. 1.101b
„ महाशिलाम् VI. 58.52b
महावेदिः कुशैरिव III. 26.33d
महाव्यसनकर्शिताः II. 59.4b
महाशङ्कुरिति स्मृतः VI. 28.34b
महाशङ्कुसहस्राणाम् „ „ 34c
महाशङ्कुसहस्रेण „ „ 38c
महाशना व्योमचरा निशाचराः V. 8.7b
महाञ्शीतोदको ह्रदः III. 73.40d
महाशैलगुहावासाः IV. 37.6a
महाशैलो महात्मना IV. 67.43b
महासत्त्वं महाबलम् V. 46.20d
महासत्त्वः स रावणिः VI. 46.22d
महासत्त्वो न विव्यथे „ 76.68b
महासत्त्वो महातेजा IV. 66.19a
महासत्त्वो महाबलः III. 39.23b
„ „ V. 42.4b
महासमूहेषु नयानयज्ञाः VI. 82.27d
महासर्प इव श्वसन् IV. 16.13d
महासर्पमिवासह्यम् VI. 107.11c
महासाराणि लक्ष्मणः IV. 33.12d
महासारा महाबलाः VI. 65.37b
महासिकृत्ताग्र इवाचलेन्द्रः VI. 67.157b
महासुरं भीममित्रनाशनम् „ 56.38c
„ वृत्रमिवामराधिपः „ 67.176d
महासेनप्रसूतिं तत् VII. 16.1c
महास्कन्धः प्रशाखवान् VI. 128.6d
महास्त्रमाश्रित्य सुरेन्द्रशत्रुः VI. 73.64b
महास्थैर्यं महामुनेः VII. 30.27b
महास्यं दीप्तमूर्धजम् VII. 9.29d
„ पर्वतोपमम् III. 32.9d
महास्वनं दुःखपरायणा सती VII. 48.26d
महाहरिं तं प्रतिनैर्ऋतर्षभः V. 47.3d
महाहवे वानरवाहिनीषु VI. 73.51b
„ वैश्रवणेन वा स्वयम् VI. 24.44d
महाहाटकतोरणम् V. 4.24d
महाहिकल्पं शरमन्तकामम् VI. 59.38c
महाही रूषितावित्र V. 10.21d
महाह्रदस्थं सलिलं विभाति IV. 30.48b

महेन्द्रकान्तां वनषण्डमण्डिताम् IV. 40.71a
महेन्द्रकृतकेतनः I. 75.8d
महेन्द्रतुल्योऽशनिभीमवेगान् VI. 59.101b
महेन्द्रदत्तं कवचं स तन्महत् VI. 111.124b
महेन्द्रदत्तैः श्रीमद्भिः IV. 33.16a
महेन्द्रधामप्रतिमम् II. 15.36c
महेन्द्रध्वजसंकाशः II. 61.7a
महेन्द्रपरिपालितम् IV. 42.36b
महेन्द्रपुत्रं पतितम् IV. 17.11a
महेन्द्रभवनाद्गृहम् III. 35.35c
महेन्द्रमथ संप्राप्य VI. 4.92a
महेन्द्रममराः सर्वे VII. 29.28c
महेन्द्रमरिमर्दनः IV. 67.39f
महेन्द्रमिव दुर्धर्षम् IV. 17.10c
,, दुर्जयम् IV. 33.64d
,, पौलस्त्यम् V. 18.10c
महेन्द्रमेघसंकाशः V. 57.15a
महेन्द्रवज्रप्रतिमैः शरौघैः III. 65.16d
महेन्द्रवज्राशनितुल्यवेगम् VI. 67.165c
महेन्द्रवरुणोपम V. 40.6d
,, VI. 41.6d
महेन्द्रवरुणोपमम् III. 37.3d
,, IV. 12.10d
महेन्द्रवरुणोपमः III. 50.4d
,, IV. 52.4b
महेन्द्रवरुणोपमान् VII. 19.2b
महेन्द्रवरुणोपमौ II. 1.4b
महेन्द्रवेश्मप्रतिमं निवेशनम् II. 5.26b
महेन्द्रवैवस्वतदर्पहन्ता VI. 59.25c
महेन्द्रशिखरेष्वहम् IV. 67.37d
महेन्द्रशिखरोपमम् VI. 77.2d
महेन्द्रश्च कृतो राजा VI. 117.27a
,, महातेजाः VII. 29.22c
महेन्द्रसदनोपमम् II. 17.19b
,, IV. 33.14d

महेन्द्रसदृशद्युतिम् IV. 42.3d
महेन्द्रसदृशद्युती IV. 128.21b
महेन्द्रसदृशं पतिम् III. 47.33b
महेन्द्रसदृशो भुवि II. 104.12b
महेन्द्रसद्मप्रतिमं च वेश्म II. 15.44a
महेन्द्रसमविक्रम V. 58.78b
महेन्द्रसमविक्रमः IV. 67.42d
,, V. 58.18b
,, VI. 25.30b
महेन्द्रसमविक्रमाः IV. 38.32b
महेन्द्रस्तेन पर्वतः V. 1.15b
महेन्द्रस्य गिरेर्द्वारम् IV. 59.12c
,, गिरेस्तदा V. 57.37d
,, च पुत्रस्य VII. 28.9c
,, पुरी यथा VII. 3.25d
,, महात्मनः VII. 86.9b
,, महाबलः IV. 67.42b
,, ,, V. 58.1b
महेन्द्रहिमवद्विन्ध्य IV. 37.2a
महेन्द्रं पर्वतोत्तमम् I. 76.15d
,, ,, ,, ,, 20d
,, ,, ,, ,, 22d
,, पाकशासनम् III. 19.7d
,, बाणवर्षेण VII. 29.24c
,, सोऽभ्यवर्तत VII. 28.31d
महेन्द्रः पर्वतोत्तमः IV. 41.20d
,, पाकशासनः III. 30.34d
,, ,, IV. 42.35b
,, ,, V. 58.15d
,, ,, VI. 120.1b
,, ,, VII. 30.7b
,, प्रत्युवाचेदम् VI. 120.11c
महेन्द्राग्रात्खमाप्लुतः V. 58.8b
महेन्द्राग्रात्समुत्पल्य V. 61.2c
महेन्द्राध्युषितः पुरा I. 47.10d

माल्यगन्धपुरस्कृतैः VI. 73.19b
माल्यगन्धश्च मूर्छितः II. 114.20b
माल्यदामानि रावणः VI. 65.27b
माल्यमोदकदक्षिणाः II. 67.27b
माल्यमोदकहस्तैश्च II. 7.4a
,, VI. 127.16c
माल्ययोग्याः पृथक्पृथक् II. 3.19b
माल्यवद्भुजनिर्मुक्ता VII. 8.10a
माल्यवन्तमथाब्रवीत् VI. 36.2d
माल्यवन्तमिवाचलम् VII. 6.60d
,, ,, 8.6b
माल्यवन्तं तु ते सर्वे VII. 6.60c
,, समुद्दिश्य VII. 8.11c
,, सुमालिं च VII. 5.6a
,, स्थितं दृष्ट्वा VII. 8.6a
माल्यवानपि राक्षसः VII. 8.20b
माल्यवानभ्यनुज्ञातः VI. 36.15c
माल्यवानिति विख्यातः VII. 25.22c
माल्यवान्नाम राक्षसः VI. 35.6b
,, वैदेहि V. 35.79c
माल्यवान्पुनराश्वस्तः VII. 8.14c
माल्यवान्संनिवृत्तोऽथ VII. 8.1c
माल्यवांश्च सुमाली च VII. 6.59c
माल्यवांश्चैव राक्षसः VII. 6.7b
माल्यवांस्तु निशाचरः VII. 8.23b
माल्यं च विविधं बहु II. 24.43b
,, दिव्यं महाबलः III. 72.4d
माल्यानि विविधानि च III. 64.39d
,, ,, ,, VII. 42.10b
,, स्थलजानि च II. 59.8b
माल्यान्याभरणानि च II. 10.7d
माल्यापणेषु राजन्ते II. 71.41a
माल्यैर्गन्धैश्च गन्धिभिः VI. 60.34d
माल्यैर्वैक्रैश्च भूषितम् IV. 25.29d
माल्यैश्च बहुसंस्थितैः V. 11.24b

माल्योपेताः सहस्रशः II. 91.62d
मावमंस्था दशरथम् II. 35.8a
मा वशं द्विषतां गमम् II. 30.19d
,, वालिनं प्रेतगतो यमक्षये IV. 30.84c
,, वालिपथमन्वगाः IV. 30.81d
,, ,, ,, 34.18d
,, विकाङ्क्षस्व शोभने V. 37.26b
,, विनाशमुपानय V. 51.37d
,, विनाशं गमिष्यामः V. 35.63e
,, विप्रं मन्युराविशेत् I. 10.31d
,, विमर्शो वसुमतिः II. 34.44c
,, विषादं कुरुष्व ह VII. 54.17d
,, ,, कृथा देवि VI. 48.22c
,, ,, कृथाः शुभे VII. 47.16b
,, ,, ,, शूर VII. 72.13c
,, ,, महाबुद्धे III. 61.14a
,, विषादेन योजय VII. 41.14d
,, वीरभार्ये विमतिं कुरुष्व IV. 24.42a
,, शत्रुभिररिन्दम IV. 22.22b
,, शंसीस्त्वं महीपते II. 35.25d
,, शुचः कमलेक्षणे I. 70.35d
,, ,, पुरुषव्याघ्र I. 41.17c
,, ,, ,, VII. 52.10a
,, ,, पुरुषोत्तम IV. 1.115b
,, शोकं मा च संतापम् II. 72.53a
,, शोको देवि दुःखं वा II. 44.24a
माषराशिप्रतीकाशम् V. 10.28a
माषाणां लवणस्य च VII. 91.20b
मासमात्रोषितः पथि VII. 65.1b
मासमेकमिवाभवत् VII. 87.29f
मासं दशरथात्मज V. 38.64d
,, ,, ,, 65.25b
,, पुरुषभावेन VII. 89.22c
,, भवति तर्पितः IV. 37.30d
,, भूत्वाथ कार्दमिः VII. 87.29d

मिथिलाधिप राजेन्द्र I. 67.6c
मिथिलामभ्युपागम्य I. 66.18a
मिथिलामवरोधकः I. 71.16d
मिथिलामुपयातांस्तु I. 73.5c
मिथिलां मिथिलेश्वरः I. 74.7b
,, सम्पूजयन् I. 48.10d
मिथिलोपवने तत्र I. 48.11a
मिथुनं स्वर्गमभ्ययात् II. 64.57d
मिथो राजन्समर्थितः II. 23.22b
,, राजा तमब्रवीत् II. 34.30d
मिथ्या तदपि ते वचः III. 30.4d
मिथ्यापवादोपहता VI. 116.18c
मिथ्या पृष्टं सुखागतम् VI. 17.60d
मिथ्याप्रतिज्ञः काकुत्स्थ I. 21.3c
मिथ्या प्रतिज्ञां कुरुते IV. 34.8c
,, प्रव्रजने रताम् V. 22.5d
,, प्रव्रजितौ वने VI. 80.17b
,, प्रव्राजितो रामः II. 48.28a
,, प्रश्रितमानसः IV. 17.43b
मिथ्यारोपितविक्रमः III. 21.17d
मिथ्या वाक्यं तु परमम् III. 9.3c
,, ,, न ते भूतम् III. 9.4c
मिथ्यावादी च वानर IV. 34.13b
मिथ्यावादीति धार्मिकम् II. 52.62d
मिथ्यावृत्तस्य रक्षसः III. 30.5b
मिथ्यावृत्तं च रावणम् VI. 17.66b
मिथ्या संतापमागतम् VI. 84.16d
,, ,, ,, 85.8b
मिमर्दयिषवो रणे VI. 24.20d
मिश्रैर्नीलदलद्युपाम् II. 91.17b
मिश्रं शोणितबिन्दुभिः VI. 23.5d
,, ,, ,, 41.14d
मिषतां नो महाद्युतिः VI. 92.2d
,, सर्वरक्षसाम् V. 42.36d
,, ,, ,, 43.11d
मिषतां सर्वरक्षसाम् VI. 43.32d
,, ,, ,, 76.54d
मीनलग्ने प्रसन्नधीः I. 18.15b
मीनवञ्जुलसेविताम् III. 61.16b
मीनसंक्षोभचलितैः II. 40.35c
मीनाहतं पद्मनिबद्धिन्नाभ्रम् V. 29.2d
मीनैरपि च चञ्चलैः I. 43.21d
मीनैरिव महोदधिः VII. 7.7b
मीनोपसंदर्शितमेखलानाम् IV. 30.54a
मीलिताक्षीणि मारुतिः V. 9.36b
मुकुटं पार्श्वमागतम् VII. 15.14d
मुकुटेन महाद्युतिम् V. 49.2d
,, विभूषितः VI. 53.6b
मुकुटेनापवृत्तेन V. 10.25c
,, VI. 109.3c
मुकुटेनास्पृशं प्रभो IV. 9.26b
मुकुटे प्राहरद्रणे VII. 15.14b
मुक्तातोयमिवाम्बुदम् IV. 18.2b
मुक्तपुष्पविराजितम् V. 4.4d
मुक्तपुष्पावकीर्णेन I. 5.8c
मुक्तमिन्द्रजिता तत्तु VI. 90.23a
मुक्तरश्मिरिव ध्वजः IV. 17.2d
मुक्तवर्षमिवाकाशे VI. 88.7a
मुक्तशापं वनं तच्च I. 26.35c
मुक्तश्च सुग्रीवभयात् IV. 56.13e
मुक्तश्चेन्द्रजिता शक्रः VII. 30.16c
मुक्तस्तु वज्रनिर्घोषः IV. 16.35a
मुक्तः शत्रुघ्न भूतानाम् VII. 63.24c
,, शम्बरवृत्रहा VI. 7.23b
,, सुररिपोर्वीर VII. 1.26c
मुक्ताकलापप्रतिमाः पतन्तः IV. 28.50c
मुक्ताकलापैरिव लम्बमानैः IV. 28.48d
मुक्ताजालप्रतिच्छन्नम् VII. 15.36c
मुक्ताजालवृतानि च IV. 50.31b
मुक्ताजालवृतेनाथ V. 49.2c

मृगं हत्वाऽऽनय क्षिप्रम् II. 56.23a
मृगः परमशोभनः III. 42.19b
मृगा गोमायुना यथा III. 41.14d
मृगाजिने सोऽयमिह II. 99.32c
मृगाणां तु भयं तीक्ष्णम् IV. 59.9c
„ महिषाणां च II. 99.7c
„ „ „ V. 11.14a
„ „ „ VI. 60.32a
मृगान्निहतयूथपान् IV. 19.6d
मृगान्बहुसहस्रशः VII. 65.12b
मृगान्मृगवधे रतः III. 42.29d
मृगा मूलफलाशिनः IV. 17.30b
„ मृगीभिः सहिता II. 93.19a
मृगायुतं वानरवारणैश्च II. 27.22b
मृगा येऽन्ये वनेचराः III. 42.28d
मृगाञ्शतसहस्रशः VII. 87.9b
मृगाश्चरन्ति सहिताः III. 43.11c
मृगाश्च रौद्रा बहुधा विनेदुः V. 48.22d
मृगाश्चापि प्रदक्षिणाः I. 74.10d
मृगांश्च सुबहून्निघ्नन् V. 1.4c
मृगाः प्रशमयन्त्येते I. 74.13a
„ सिंहा गजाश्चैव II. 29.3a
मृगी कोकैरिवार्दिता V. 25.5d
मृगीभिः सहितान्मृगान् IV. 1.100f
„ सहिता भवेत् III. 60.23d
मृगीवोत्फुल्लनयना II. 38.8a
„ VI. 115.10c
मृगीवोत्फुल्ललोचना V. 65.26d
मृगीषु परिमार्गितुम् V. 11.44d
मृगीं च मृगमन्दां च III. 14.21c
„ श्वभिरिवावृताम् III. 55.5b
मृगेभ्योऽन्यत्र विद्धि वै III. 7.19b
मृगैर्बहुभिराकीर्णम् III. 1.3c
मृगैर्मयूरैश्च समाकुलोल्बणम् II. 15.41c
मृगैश्चन्द्रार्धचन्द्रैश्च VI. 80.13c
मृगैश्च मत्तैर्बहुभिश्च कुञ्जरैः II. 54.43c

मृगैः परिवृतोऽथान्यैः III. 44.10c
„ सिंहगुहामिव II. 99.23d
मृगोऽद्भुतो विचित्राङ्गः III. 43.15c
मृगोऽद्य न भविष्यति III. 43.25d
„ „ „ „ „ 49b
मृगो भूत्वाऽऽश्रमद्वारि III. 42.15a
„ हरति मे मनः III. 43.10b
„ ह्येवंविधो रत्न- III. 43.8a
मृग्यः सिंहवशा इव VII. 24.11b
मृग्या नरवरोत्तम III. 14.23b
मृजन्तमाजौ निशिताग्र्योत्तमान् VI. 89.53c
मृणालीपङ्कदिग्धेव V. 17.25e
„ „ 19.6c
मृणालीमचिरोद्धृताम् V. 19.17d
मृतकल्पः शयिष्यसे VI. 61.23d
मृतपाः संभवन्तु ते I. 59.19b
मृतपुत्रा तपस्विनी III. 58.8b
मृतभूत इवार्तस्तु III. 36.23c
मृतसंजीवनीं चैव VI. 74.33a
मृतस्य भर्तुर्वदनं समाश्रिता IV. 22.31b
„ सलिलक्रियाम् II. 14.16d
मृतं बालमुपादाय VII. 73.2c
„ वचनमब्रवीत् IV. 23.1d
मृतायामपि वैदेह्याम् III. 66.13a
मृता वा जनकात्मजा V. 13.15b
„ हृता वा पथि वर्तते वा III. 63.17d
मृते दशरथे व्यक्तम् II. 48.26c
„ मयि गते त्वयि III. 58.7a
मृते मयि गते रामे II. 12.88a
„ „ „ „ „ „ 93a
„ „ „ „ „ 13.5a
मृतेव संज्ञां प्रतिलभ्य देवी II. 21.51c
मृतो गत्वाऽऽत्मनो गतिम् VII. 15.22d
„ हि किमशिष्यति II. 108.14d
मृत्युकाले तु संप्राप्ते III. 29.19c

यथा शक्रं मरुत्पतिम् IV. 31.44d
,, शक्रो बृहस्पतिम् VII. 100.5d
,, शची महाभागा V. 24.10a
,, शत्रुषु शत्रुघ्नः VI. 33.28c
यथाशनिरवेभ्यस्तु VII. 32.55a
यथाशनीभिः सतडिन्महाभ्रः VII. 7.49d
यथा शरदि तोयदाः VI. 46.16d
,, ,, मेघानाम् VI. 16.12a
,, शरीरो बालस्य VII. 75.4a
यथाशास्त्रमिदं शृणु VI. 18.12d
यथाशास्त्रं प्रचोदिताः I. 14.2cd
,, ,, ,, ,, 30d
,, यथाविधि I. 13.41b
यथा शुक्रस्य लक्ष्मण III. 43.33d
,, शुष्काण्यरण्यानि VI. 67.39a
,, श्रीर्विष्णुमव्ययम् II. 118.20d
,, श्रुत्वैव न चिरात् V. 58.107a
,, श्वश्रूं तपस्विनीम् VI. 48.20d
यथाश्विनौ भार्गवनीतिसंहिताम् VII. 93.18d
यथा स एवार्हति तत्र वक्तुम् II. 21.55d
,, स ततगः प्रभुः VI. 28.11d
यथासति तथा सति II. 106.4b
यथा सदस्यैः सहितास्त्रयोऽग्नयः II. 104.32d
,, सदृशदारेषु I. 18.51a
,, स देवप्रवरः I. 11.1c
यथासन्नान्द्रुमानिमान् IV. 1.84d
यथा समाप्ते पुनरात्रजेयम् II. 21.62c
,, समुदितेऽहनि II. 14.42b
,, सर्वं सुविहितम् I. 13.17a
,, सर्वैः पितामहैः II. 17.9d
,, सस्येन मेदिनी VI. 33.34d
यथासंदिष्टमिष्टवत् II. 82.23d
यथा संदेशमक्लिष्टम् VI. 24.27c
यथासंदेशमक्लीबम् VI. 20.9c
यथा सा धर्षिता पुरा VI. 60.10d

यथासिद्धमुपाहरन् VII. 105.14d
यथासिद्धं तवानघ VII. 105.13d
यथासि पुनरागतः VI. 126.8d
यथा सीतामवाप्स्यसि III. 72.7d
यथासुखमसंबाधन् VI. 122.27c
यथासुखं गच्छतु राजपुत्री II. 38.5c
,, पर्वतनिर्झरेषु IV. 39.44a
,, भुङ्क्ष्व चिराय राज्यम् II. 36.33d
,, यथावच्च VI. 3.5a
यथा सुतस्ते भरतोऽभिषेक्ष्यते II. 9.61d
,, सुते भ्रातरि वा विवासते II. 48.36b
,, सुनयनं वल्गु V. 36.39a
,, सूर्यस्य सोमस्य III. 71.2a
यथा सूर्यं सुवर्चला II. 30.30d
,, ,, ,, V. 24.9d
,, सूर्याग्निसंतप्तः II. 85.18c
,, सेना समग्रा मे IV. 29.30a
,, ,, ह्यनायका II. 14.54b
,, सेयं नृशंसस्य II. 78.11c
,, सेवा पितुर्मता II. 30.35d
,, सैन्येन गच्छाम VI. 19.40e
यथासौ न पुनर्व्रजेत् V. 58.114d
यथा सौम्य मया श्रुतम् III. 11.53b
,, ,, सुरेश्वरैः VI. 119.17b
यथासौ संप्रहृष्टानाम् VI. 51.3a
यथास्तं गत आदित्ये VI. 90.81a
यथास्ति न तथा धर्मः VI. 83.15c
यथास्थानं च पावकम् VI. 111.114d
,, प्रधाविताः II. 103.36d
,, विचक्रमुः VI. 111.116d
यथास्म पोषिताः पित्रा II. 17.9c
,, रमते पुरा II. 60.9b
यथास्यात्पुरुषस्त्विला VII. 90.19b
यथा स्यात्सलिलस्वनः VI. 41.55d
,, स्यात्सूर्यमण्डलम् V. 1.58d

वक्तुं शक्यं हि नामतः VII. 2.5d
वक्त्रमूलेषु रेजिरे V. 9.54d
वक्त्रं कृत्वा नभः स्पृशम् V. 1.139d
,, न भ्राजते प्रभो VI. 111.37b
,, पातालसंनिभम् VI. 60.58b
,, प्रसारयामास V. 1.181c
,, बभासे सितशुक्लदंष्ट्रम् V. 29.7c
,, वक्त्रेण वाजिनाम् VI. 107.35d
वक्त्राच्छोणितमुद्वमन् IV. 48.20d
वक्त्रात्क्षतजबिन्दवः IV. 11.48b
वक्त्राद्व्यक्तमिव ज्वलन् VI. 92.18f
वक्त्रे पातालसंनिभे VI. 67.35b
वक्राः परमपापिकाः II. 9.40d
,, सुपक्ष्माश्च सुनेत्रमालाः V. 10.26d
वक्षसि द्विविदं ततः VI. 76.30d
,, द्विविदाग्रजम् VI. 76.44d
वक्षस्थले मुद्गरमुष्टिभिश्च VI. 66.40b
वक्षस्यभिजघान ह III. 28.27d
वक्षस्यभिजघानाशु VI. 43.39c
वक्षस्यभिहतः कपिः V. 46.30d
वक्षांसि रुधिरप्लुताः III. 20.20d
वक्षोदेशे निशाचरः VI. 54.26d
वक्ष्यन्ति चिन्तयित्वा ते I. 9.17a
,, ते महीपालम् I. 9.12a
,, निकृता जनाः V. 21.14b
,, मनुजा भुवि VI. 111.95d
,, सुकृतं पुनः VI. 111.96b
वक्ष्यन्ते दैवचिन्तकाः II. 4.21d
वक्ष्यसे चेदृशं कृत्वा IV. 17.45c
वक्ष्यस्यरिनिषूदन VI. 104.23b
वक्ष्यामि किमहं गतः VII. 52.3d
,, कुरु मे सत्यम् VI. 120.4c
,, वी तं महावीर III. 71.32c
,, परुषं वचः V. 13.21b
,, प्रियमप्रियम् II. 12.32d

वक्ष्यामि भरतं दृष्ट्वा II. 97.17c
,, -यदसाधु च VI. 64.11d
,, वचनं मम III. 17.20b
,, ,, राजन् VI. 17.52c
,, शृणु मे वचः II. 11.24b
,, श्रूयतां हितम् VII. 36.8d
वक्ष्यामीह कथं तदा II. 12.66b
वक्ष्याम्यद्य हितं वचः IV. 15.15d
वङ्गाङ्गमगधा मत्स्याः II. 10.37c
वच आविध्य राघव II. 24.35d
वचनमनुनिशम्य तस्य देवी II. 59.33c
वचनस्य ब्रवीमि ते IV. 18.17b
वचनं कर्तुमुद्यतः I. 26.5d
,, किंचिदप्रियम् III. 54.16d
,, कौशिकस्येति I. 26.2c
,, क्षुभितेन्द्रियः IV. 9.12d
,, गन्धमादनः IV. 49.11b
वचनं चेदमब्रवीत् II. 57.28d
,, ,, ,, 72.23d
,, ,, ,, 96.13d
,, ,, ,, 97.1d
,, ,, ,, 112.27b
,, ,, III. 15.27d
,, ,, IV. 16.1d
,, ,, ,, 37.1d
,, ,, V. 16.6d
,, ,, ,, 39.18d
,, ,, ,, 58.22d
,, ,, VI. 12.27d
,, ,, ,, 46.23d
,, ,, ,, 72.1d
,, ,, ,, 79.9d
,, ,, ,, 102.6d
,, ,, VII. 20.22d
,, ,, ,, 107.5d

विचित्रार्थपदं सम्यक् I. 4.33a
विचित्रां चित्रकाननाम् V. 14.6b
„ „ „ „ 34b
„ परमाद्भुतैः V. 18.7d
विचित्रेषु वनेषु च IV. 40.34b
विचित्रो नास्ति राघव III. 43.8b
विचित्या राममब्रवीत् III. 64.3d
विचिनुध्वं तथा सीताम् IV. 49.5c
विचिनोति च विन्ध्यस्य IV. 50.1c
„ स्म पर्वतम् IV. 50.4d
विचिनोमि पुनः पुनः V. 13.50d
विचिन्तमानो भरतो निवर्तनम् II. 83.26d
विचिन्तयन्कामपुरस्कृतोऽपि IV. 24.9d
विचिन्तयन्ती सतत तमेव V. 32.12c
विचिन्तयन्नतुं चापि IV. 11.76c
विचिन्तयामास चिरं स रावणः III. 33.24d
„ मुहुर्महात्मा VI. 67.84d
„ रणे पराक्रमम् V. 47.25d
„ विह्वललोचना V. 32.8d
„ हरिप्रवीरः V. 48.39d
विचिन्त्य दक्षिणामाशाम् V. 63.23a
„ राजानामचिन्त्यदर्शनम् II. 66.27d
„ „ „ 69.21d
विचिन्त्य राजा विपुलं प्रदध्यौ VI. 73.2d
„ वाचा ब्रुवती तमेव V. 32.11b
„ सीता शुद्धेति VII. 96.21c
विचिन्वत महाभागाम् IV. 43.15c
विचिन्वतश्च वैदेहीम् V. 18.1c
विचिन्वतो दर्शनमेति मैथिली V. 12.2d
विचिन्वन्तस्ततस्ततः IV. 50.7c
विचिन्वन्तः सहस्रशः V. 31.13b
विचिन्वन्ति तथापरे VI. 22.60b
„ समन्ततः IV. 47.2d
„ समाहिताः IV. 48.15b
विचिन्वन्तु च काननम् II. 93.20b
विचिन्वन्तु वनं सर्वे IV. 49.14c
„ वनौकसः IV. 49.7b
„ समन्ततः IV. 49.4d
विचिन्वन्तो हरिवराः IV. 49.17c
विचिन्वन्तौ महीं कृत्स्नाम् V. 35.24a
विचिन्वन्त्यो हतं पतिम् VI. 110.3d
विचिन्वन्नाविजनासि VI. 22.4a
विचिन्वन्प्रायशस्तत्र IV. 48.22b
विचिन्वंश्च ततस्ततः VII. 75.10b
विचीयन्ते महावने III. 43.32b
विचेतनं विघूर्णन्तम् I. 30.19a
विचेतनाऽभूद्भयशोकपीडिता III. 56.36d
विचेतनो वासवसूनुराहवे IV. 16.39c
विचेतव्यास्ततस्ततः IV. 43.27d
विचेतुमुपचक्रमे III. 61.19d
„ V. 12.14d
विचेतुं वयमाज्ञप्ता V. 60.15c
विचेया तेषु जानकी IV. 40.67d
विचेयाः काननौकसः IV. 40.29b
विचेरतुश्च तां सेनाम् VI. 5.2c
विचेरुरुद्यतैः शैलैः VI. 69.45c
विचेरुर्दक्षिणां दिशम् IV. 49.15d
विचेरुर्नैऋताम्बुदाः V. 45.7d
विचेरुश्च समन्ततः IV. 49.22d
विचेरुस्तत्र राक्षसाः VI. 75.63f
विचेरुस्ते तपो घोरम् VII. 5.10c
विचेरुः सर्पशत्रवः VI. 102.25d
विचेष्टन्ती महीतले V. 26.2d
विचेष्टन्ते विचक्षण III. 24.5d
विचेष्टमानमुत्प्रेक्ष्य II. 14.1c
विचेष्टमाना पतिता V. 13.10c
विचेष्टमानामादाय III. 49.22c
विचेष्टमानो निजघान वृक्षान् VI. 67.159c
विचेष्यामः समाहिताः III. 65.14d
विच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः VI. 83.33c

व्यक्तमुत्कण्ठते वापि III. 13.2c
व्यक्तमेव प्लवङ्गम IV. 2,17b
व्यक्तमेष महायोगी VI. 111.11c
व्यक्तस्वस्तिकलक्षणैः V. 1.19b
व्यक्तहस्तदशायतौ VI. 71.21d
व्यक्तं कस्यापि रक्षसः III. 64.50d
,, जानाति मैथिलीम् III. 60.15b
,, दैवादहं मन्ये VII. 50.4a
,, नभः शस्त्रविधौतवर्णम् IV. 30.36a
,, नैराश्यमागतः VI. 92.47b
,, प्राप्ताः स्म तं देशम् II. 93.7c
,, प्राप्याभिषेचनम् II. 96.17b
,, मयि च तस्यां च II. 22.20c
,, मां हन्तुमुद्यत VI. 92.47d
,, यातो यमक्षयम् VI. 88.11b
,, रामस्य विज्ञाय II. 44.8a
,, रामाभिषेकार्थे II. 14.65a
,, लोकविनाशनः V. 55.20d
,, वक्ष्यति मे पिता III. 61.9b
,, वा यमसादनम् VI. 88.46b
,, शोचति दुर्मनाः III. 58.12d
,, स न भविष्यति IV. 11.55b
,, सा भक्षिता बाला III. 60.30a
,, स्वर्गपथोऽनघ II. 93.18d
,, हास्यति जीवितम् IV. 55.16b
,, हिरण्मयांस्त्वं हि III. 53.19a
,, हृष्टश्च भाषते IV. 4.32b
व्यक्ताक्षरपदं चित्रम् II. 119.2a
व्यक्ता व्यक्तिर्भविष्यति II. 23.18d
व्यक्तिं वां नोपलक्षये IV. 12.31d
व्यगर्हयन्त दुःखार्ता II. 48.6c
व्यग्रो हि राघवो ब्रह्मन् VII. 105.4c
व्यचरन्दण्डकारण्यम् III. 38.3a
,, ,, 39.3c
व्यचरन्मारुतात्मजः VI. 74.59d
व्यचरं दण्डकावनम् III. 39.6d
व्यचेष्टन्त निरानन्दा II. 66.23c
,, रणक्षितौ VI. 82.16b
व्यजनं छत्रमेव च II. 113.8b
व्यजनाभ्यां च मुख्याभ्याम् II. 26.11a
व्यजने च स्वलंकृते II. 19.34b
व्यजायत सुतेजसः III. 14.19b
व्यञ्जनानि हि ते यानि V. 33.11a
व्यञ्जनार्थं च सौमित्रे II. 32.21a
व्यतिक्रमं न वेत्स्यामि II. 27.21a
व्यतिक्रम्य तु वेगेन III. 69.4a
,, शनैः शनैः I. 11.14d
व्यतिक्रान्तपुरस्कृतम् IV. 18.48b
व्यतिचक्राम तं जनम् II. 14.31b
,, सागरम् V. 1.136d
व्यतीता या निशा पूर्वा VII. 37.1c
व्यतियातौ महाबलौ III. 69.4d
व्यतिष्ठत प्रेक्ष्य तदा सुमन्त्रम् II. 33.30c
व्यतिष्ठन्गहने वने IV. 14.1d
व्यतिष्ठं च क्वचित्क्वचित् II. 50.6d
व्यतीतकालायतिसंप्रतिक्षमम् VI. 10.27b
व्यतीतश्चोदनादृते IV. 29.19b
व्यतीतस्तत्र नो मासः IV. 57.17c
व्यतीतहर्षां परिदीनमानसाम् V. 29.1b
व्यतीतं कालपर्यये IV. 31.8d
व्यतीतायां तु शर्वर्याम् II. 67.2a
व्यतीता रजनी शीघ्रम् VII. 68.1c
व्यतीता वार्षिकी रात्रिः VII. 66.13c
व्यतीतांश्चतुरो मासान् IV. 30.78c
व्यतीतांस्तान्मदोदग्रः IV. 33.45c
व्यतीयाद्राघवस्य च VII. 99.10d
व्यतीयाद्युध्यमानयोः VI. 88.62b
,, ,, ,, 76b
व्यथयन्तीव मे चित्तम् IV. 1.101c
व्यथयन्राक्षसान्सर्वान् VI. 41 91a

शंसतीव मनोरथम् VI. 4.7d
शंसद्रामो महाबलः I. 1.59d

शिवोदकं च पम्पायाम् III. 73.21a
शिशिरस्येव संपातः V. 53.30c
शिशिरे सलिलेशायी I. 63.24a
शिशिरो नाम पर्वतः IV. 40.31b
शिशुकं तं समादाय VII. 36.1c
शिशुनागाभिरक्षितः III. 73.32b
शिशुभावे हनूमति VII. 35.25b
शिशुमादाय मारुतः VII. 35.49d
शिशुमारान्वराहांश्च VII. 28.39c
शिशुमारेण चेन्द्रजित् V. 27.28d
शिशुमारैर्भुजंगमैः VII. 6.48b
शिशुमारैर्महोरगैः VII. 25.36d
शिशुरेष त्वदोषज्ञ VII. 35.30a
शिशुं तं परिमृष्टवान् VII. 36.3d
शिशुः शरवणे यथा VII. 35.22d
शिश्यिरे चाभिभूतानि VI. 22.13c
शिश्ये तत्रोदधौ हरिः I. 45.30b
„ नरवरात्मजः II. 6.4d
शिष्टमत्रापविद्ध्यन्ति V. 63.8a
शिष्टांश्चैव वनौकसः IV. 53.6b
शिष्टाः शास्त्रेष्वनागतम् III. 50.9b
शिष्टैरपरिमेयैश्च II. 1.41c
शिष्टैराचरिते सम्यक् II. 44.4a
शिष्यमाह स्थितं पार्श्वे I. 2.4c
शिष्यश्चापि गुणोदितः IV. 18.14b
शिष्यस्तु तस्य ब्रुवते I. 2.19a
शिष्यं चैवाब्रवीद्वाक्यम् I. 2.17c
शिष्यः परपुरंजयः VII. 90.14d
शिष्या धर्मरता वीर I. 23.15c
शिष्यानर्घ्यमिति ब्रुवन् II. 90.4d
शिष्यांश्चैतदुवाच ह VII. 81.3d
शिष्येण सह धर्मवित् I. 2.22b
„ सह लक्ष्मणः III. 12.14d
शिष्यैः परिवृतस्तथा II. 14.26b
शिष्योऽगस्त्यस्य संमतः III. 12.7b
शिष्यो लक्ष्मणमब्रवीत् III. 12.13d
शिष्योऽस्मि भवतोस्तथा I. 72.15b
शिंशपापादपो महान् V. 58.55d
शिंशपामन्ववैक्षत V. 31.16f
शिंशपामलकौ जम्बूः II. 91.51a
शिंशपां तामुपागमत् V. 24.17d
„ पर्णसंवृताम् V. 14.41d
शिंशपाः कुटजास्तथा VI. 4.80d
शिंशुमारगणैस्तथा I. 43.16d
शिंशुमारैश्च नक्रैश्च II. 50.25a
शिंशुमारोरगगणैः I. 43.21c
शीघ्रगस्त्वग्निवर्णस्य I. 70.41a
शीघ्रगस्य मरुः पुत्रः II. 110.32a
„ „ सुतः I. 70.41b
„ महात्मनः IV. 67.10b
शीघ्रगामाकुलावर्ताम् II. 46.28c
शीघ्रगामूर्मिमालिनीम् II. 55.22b
शीघ्रगा व्यवसायिनः IV. 29.31b
शीघ्रगां सागरंगमाम् II. 52.3d
शीघ्रमस्त्रं प्रदर्शयन् VI. 90.33b
शीघ्रमस्य दुरात्मनः VI. 101.54b
शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तम् I. 18.40a
शीघ्रमाख्यातु मा चिरम् VII. 107.8d
शीघ्रमागच्छ भद्रं ते I. 68.11c
„ सौमित्रे VII. 45.19a
शीघ्रमागन्तुमर्हथः VI. 25.8d
शीघ्रमागम्य रामाय VI. 83.7c
शीघ्रमाचक्ष्व राघव II. 63 43d
शीघ्रमाज्ञापयच्चरान् VI. 29.16f
शीघ्रमानन्दजं जलम् II. 44.23d
शीघ्रमानय भद्रं ते II. 89.2c
„ मे सर्वान् I. 8.4c
„ सुन्दरम् II. 14.63b
„ सौमित्रिम् VII. 44.2a
शीघ्रमानीयतामिति I. 13.9b

शीघ्रमानीयतामितिII. 3.23b
शीघ्रमानीयतां रथः VII. 46.3d
शीघ्रमामन्त्र्यतां जनः VII. 91.18d
शीघ्रमारोप्यतामिति II. 52.10d
शीघ्रमारोह सुव्रत II. 52.9d
शीघ्रमासेदुरञ्जसा II. 68.21d
शीघ्रमुत्क्षिप्यतां पादः III. 34.23e
शीघ्रमेनान्सुसंत्रस्तान् VI. 50.10a
शीघ्रमेव च वानर VII. 34.38b
,, विधीयताम् VII. 88.22d
,, विनश्यन्ति III. 51.26c
,, हि राक्षस्य III. 56.27a
शीघ्रमेष्यामि लक्ष्मण III. 43.50d
शीघ्रवेगाः प्रचोदिताः II. 93.12c
शीघ्रस्रोतसमासाद्य II. 103.25a
शीघ्रस्रोतस्विनीं नदीम् II. 55.13b
शीघ्रस्रोताश्च तं दृष्ट्वा III. 46.7c
शीघ्रहस्ततरोऽभवत् VI. 103.25d
शीघ्रं क्रूरेण कर्मणा II. 75.11d
,, खल्वभ्युपेतं त्वाम् VI. 63.3a
,, गच्छत्वयं वीरः VII. 24.38c
,, गच्छन्तु मन्त्रिणः I. 67.24b
,, गच्छावहे वयम् I. 62.22b
,, गत्वा तु वैदेहि VII. 46.8c
,, च बलिनौ कृतौ VI. 50.42d
,, ,, विनिवर्तस्व II. 25.2c
,, तं रूपसंपन्नौ III. 8.20d
,, दाशरथेः शिरः VI. 31.41b
,, नावमुपाहर II. 52.6d
,, निर्यातु सर्वशः I. 69.3b
,, निर्यान्तु दुर्धर्षः VI. 55.2a
,, पुनरिहागताः VI. 37.15d
,, प्रवेगा विपुलाः प्रपाताः IV. 28.50a
,, प्रेषय सर्वास्तान् V. 63.31e
,, ,, ,, ,, 64.12a
शीघ्रं प्लवगसत्तम VI. 125.3b
,, भेरीनिनादेन VI. 32.43a
,, मधुकरा इव VII. 21.26d
,, मर्मस्वताडयत् VII. 22.20d
,, यास्यामि देवेन्द्र VI. 102.9a
,, याहि रघूत्तमम् VI. 102.7b
,, याहीति सारथिम् II. 40.41d
,, रामाय दर्शय II. 59.23d
,, लक्ष्मण जानीहि III. 64.1c
,, वदत सैन्यानि VI. 95.5c
,, वरय धर्मज्ञ VII. 10.14a
,, वाहय मे रथम् VII. 29.7b
,, वै यज यज्ञं त्वम् VII. 30.47c
,, ,, रथमावह VI. 78.8d
,, व्यादिश नो राजन् VI. 17.9a
,, शीघ्रजवैर्हयैः II. 68.6b
,, सम्पाद्यतां गत्वा III. 19.24c
,, सर्वाणि यादांसि VI. 50.35c
,, सलिलमन्वगात् II. 52.81d
,, संयुज्यतां रथः II. 46.25b
,, हत्वा मृगोत्तमाम् III. 45.16b
शीघ्रानास्थाय वाजिनः II. 71.13b
शीघ्रास्त्रं संप्रदर्शयन् VI. 90.25d
शीतकाननवारिणा VI. 4.10b
शीतच्छायैर्मनोरमैः IV. 33.16d
शीततोयामशैवलाम् II. 50.12b
शीततोया महाशुभाः VI. 3.15b
शीतमङ्गलतोयाभिः III. 35.12a
शीतयिष्ये तथानलम् VI. 60.69d
शीतरश्मिर्निशाकरः VII. 23.22d
शीतरश्मेरिव क्षयः II. 19.32d
शीतलं हरितच्छदम् II. 55.23d
शीतलामलपानीयाम् II. 80.21c
शीतवत्सु सुगन्धिषु II. 88.7b
शीतवातविनिर्मुक्ताः VII. 36.6c

शूद्रायामस्मि वैश्येन II. 63.51a
शूद्राश्वकुर्विशेषतः VII. 74.20d
शूद्रांश्च मनुजर्षभ III. 14.29d
शूद्रांश्चैव सहस्रशः I. 13.20d
शूद्राः स्वकर्मनिरताः I. 6.19c
शूद्रोऽयं विनिपातितः VII. 76.15b
शूद्रो वा सत्यवाग्भव VII. 75.18f
शून्य एव मतो मम III. 62.15b
शून्यचत्वरवेदान्ताः II. 66.25c
शून्यचत्वरवेश्मान्ताम् II. 42.23a
शून्यदेशजिगीषया IV. 10.11b
शून्यमन्तःपुरं मम III. 62.11b
शून्यमावसथं दृष्ट्वा III. 60.3c
शून्यमासीन्महात्मनः I. 55.24b
शून्यसंवरणारक्षाम् II. 88.24a
शून्यं दशरथात्मजः III. 58.1b
,, मनुजवर्जितम् VII. 79.3b
शून्या [illegible] VII. 31.2d
शून्यानि बहुधा पुनः V. 11.29d
[illegible] II. 77.18b
शून्यामेव च पश्यामि VII. 46.16a
शून्या रक्षोगणैः सर्वैः VII. 3.29a
शून्यारण्या हिमध्वस्ताः III. 16.11c
शून्या वर्षगणान्बहून् VII. 111.10b
,, संप्रति लङ्का सा VII. 3.29c
,, सा नगरी लङ्का VII. 11.46a
शून्यां पुरीं दुष्प्रसहां प्रमथ्य VI. 59.34c
शून्ये न खलु सुश्रोणि II. 13.21c
,, निहतराक्षसे III. 54.21b
,, येनापनीताऽसि V. 34.32a
शून्येव प्रतिभाति मे II. 88.22b
,, ,, ,, VI. 92.11d
शून्ये वसति दण्डके III. 56.14d
,, सीतां यथासुखम् III. 36.20b
,, स्वजनवर्जिते VII. 89.5b

शून्ये हि भित्त्वा रुधिराशनानि III. 63.10d
शून्ये त्यक्तोऽस्म्यहं त्वया II. 77.6d
शून्योऽयमुटजस्तव III. 62.7b
शून्योऽयं शयनीयस्ते II. 72.11a
शून्यो लोको भविष्यति VI. 61.20d
शूरत्वं कृतविद्यश्च VII. 62.17c
,, क नु वो गतम् VI. 82.3d
शूरभार्यां हतां पश्य IV. 23.9a
शूरमक्षं निष्पिष्य I. 1.75c
शूरमानी खरात्मजः VI. 78.4b
,, न शूरस्त्वम् III. 21.17c
शूरमैश्वर्यकामं च II. 100.29c
शूरयोः संप्रयुध्यतोः VI. 102.44d
शूर वक्ष्यामि ते किंचित् IV. 15.22c
,, वाक्यान्तरे मम VII. 62.20d
शूरश्च कृतविद्यश्च I. 41.2a
,, ,, II. 13.9a
,, शूरमानी च IV. 11.74a
शूरसेना न संशयः VII. 70.6d
शूरसेनांस्तथैव च IV. 43.11b
शूरं करुणवेदिनम् III. 64.54b
,, परिभवन्ति च VI. 16.4d
,, रामं पुनः पुनः V. 38.64b
,, शूरेण पातितम् IV. 19.23d
,, ससुहृदं सुतम् II. 44.29b
शूरः क्रोधवशं गतः VI. 92.19b
,, पञ्चत्वमागतः IV. 23.12b
,, परबलार्दनः VI. 97.16b
,, शूरेण संगम्य VI. 92.3a
,, श्रीमान्सुदर्शनः II. 110.31b
,, समरकर्मणि IV. 11.23d
,, स रावणभ्राता VI. 89.2c
,, संप्रधनो हरिः VI. 96.18b
,, सेनापतिस्तदा VI. 8.1d
शूराच्छत्रुनिबर्हणात् V. 26.41d

शैब्यः श्येनकपोतीये II. 12.43a
शैशिरो भोगदः सदा VII. 42.26b
शोककाले समुत्पन्ने VI. 51.7c
शोकजालेन महता V. 15.32a
शोकजाड्यपरिद्यूना II. 47.2a
शोकदीनेषु नास्मासु IV. 30.79c
शोकदुःखभयत्रस्ताः VII. 24.9a
शोकध्यानपरां दीनाम् V. 15.23c
शोकेनानशनेन च VI. 5.18b
शोकपङ्कार्णवप्लुतः III. 60.11d
शोकपर्याकुलात्मनः VI. 2.6b
शोकपर्यायसंतप्तः II. 41.15a
शोकभारसमन्वितः VII. 48.23d
शोकभारावपीडिताम् III. 55.4b
शोकभारेण चाक्रान्ताः II. 41.19c
शोकभारैरिव न्यस्ताम् V. 17.3c
शोकमुत्सृज्य मानद II. 34.24b
,, मानसम् VI. 5.19d
शोकमोहसमन्विताम् III. 54.13d
शोकरक्तेक्षणः श्रीमान् II. 14.57a
,, ,, III. 60.10c
शोकविह्वलितेन्द्रियम् VI. 101.15b
शोकवेगपराजिताम् IV. 59.20d
शोकवेगपरीतात्मा VI. 109.1c
शोकवेगसमाहतः II. 44.18d
शोकवेगसमाहता V. 67.34b
शोकवेगसमाहितः II. 57.6d
शोकव्यसनविस्तीर्णे II. 8.21c
शोकव्याकुलितेन्द्रियम् VI. 101.22d
शोकश्च किल कालेन VI. 5.4a
,, मम विस्तीर्णः IV. 28.59a
,, हृदि वर्तते VII. 45.11d
शोकश्चिन्ता च राघवम् V. 35.44b
शोकसागरमध्यस्थम् II. 8.2c
शोकसागरमब्रवीत् II. 59.27d
शोकसागरमाप्लुताम् V. 17.24b
शोकसागरमासाद्य V. 58.53c
शोकसंजननीं चिन्ताम् VI. 101.24a
शोकसंजननो मम IV. 1.54d
शोकसंतप्तमानसा IV. 20.3b
शोकसंतप्तहृदयाम् I. 54.9c
शोकसंतापकर्शितम् II. 18.5b
शोकसंतापकर्शिता V. 59.22b
शोकसंतापकर्शितौ V. 37.61b
शोकसंतापदीनाङ्गीम् V. 58.8a
शोकसंतापनित्येन VI. 12.18a
शोकसंतापपीडिताः V. 55.19d
शोकसंदीपनो मम IV. 1.22d
शोकसंपीडितमना VI. 50.14c
शोकसंविग्नहृदयः IV. 10.5a
,, VII. 45.24e
शोकस्ते विगतः सर्वे- VI. 33.14a
शोकस्य कपिकुञ्जरः V. 13.46d
शोकस्यास्य कथं पारम् V. 37.5a
शोकस्यास्याप्रमेयस्य V. 56.4c
शोकं त्यज सुदारुणम् VI. 125.37d
,, दृढं वै जनयन्त्यशोकाः V. 16.31b
,, प्रत्याहरिष्यामि VI. 5.19c
,, वर्धयतीह मे IV. 1.34d
,, विसृज्याद्य धृतिं भजस्व III. 63.19a
,, व्यपनयिष्यति V. 39.14d
,, ,, ,, 56.21d
,, सीता वियोगजम् V. 57.48d
,, सोढुमशक्नुवन् II. 31.1d
,, संन्यस्य पृष्ठतः IV. 1.123b
शोकः शौर्यापकर्षणः VI. 2.13d
,, श्लोकत्वमागतः I. 2.40d
,, सर्वार्थनाशनः VI. 2.15f
,, संधार्यतां मातः II. 21.48a
शोकाक्रान्तौ बभूवतुः VI. 68.8d

स पपात खरो भूमौ III. 30.27a
,, ,, महाबाहुः III. 70.10a
,, ,, महीतले VI. 59.88d
,, ,, मुमोच च VI. 76.55d
,, ,, हतो भुवि VI. 98.22d
,, ,, ,, भूमौ III. 26.22a
,, परिव्राजकच्छद्म III. 49.8c
,, परिष्वज्य वैदेहीम् III. 51.37a
,, पर्जन्यइवाकाशे II. 16.31c
,, पर्वततटाग्रस्थः VI. 74.36a
सपर्वतनदीगुहम् IV. 41.11d
स पर्वतनदीह्रदम् IV. 67.12d
सपर्वतवनाकाशम् VI. 4.57c
सपर्वतवनार्णवा I. 17.36b
सपर्वतवना सर्वा VI. 60.47e
सपर्वतवनां कृत्स्नाम् I. 40.14a
,, ,, VII. 98.10a
,, भित्त्वा VI. 3.32c
सपर्वतनदोद्देशान् V. 37.39a
सपर्वतसमुद्राभ्याम् V. 1.126a
सपर्वतसरिद्द्रुमा VII. 22.27d
स पर्वतं समारुह्य VII. 16.3a
,, पर्वताग्रमुत्क्षिप्य VI. 67.52a
,, पर्वतान्पक्षिगणान्सरांसि VI. 74.49a
सपर्वता मही वीर VII. 11.17a
स पश्चात्तप्यते मूढः VII. 15.22c
,, ,, राजा II. 18.22c
,, पश्चिमेन द्वारेण VI. 81.3a
,, पश्यति फलं तस्य VII. 15.21c
,, पश्यन्विविधान्देशान् IV. 46.19a
सपाण्डुराविद्धविमानमालिनीम् V. 2.53a
सपाण्डुरोरस्कमुदारवीर्यम् III. 51 45b
सपातालं महार्णवम् VI. 22.1d
स पात्यमानैर्गिरिशृङ्गवृक्षैः VI. 60.56a
,, पादुकाभ्यां प्रथमं निवेद्य II. 115.24c

स पादुके ते भरतः स्वलंकृते II. 112.29a
,, पार्थिवो दीप्तिमवाप युक्तः I. 7.24c
,, पावकं पावकदीप्ततेजाः VI. 73.26a
सपांसुः खरदारुणः VI. 78.19b
स पिता मम काकुत्स्थ I. 34.6a
,, पितुर्वचनं श्रीमान् V. 33.24a
,, पितुश्चरणौ पूर्वम् II. 18.2a
,, पितृव्यस्य संक्रुद्धः VI. 90.46a
,, पित्रा च परित्यक्तः V. 38.32a
,, पुच्छमुद्यम्य भुजंगकल्पम् VI. 74.45a
,, पुण्यकर्मा भुवने द्विजर्षभः III. 5.42a
सपुत्रजनबान्धवम् VI. 19.21b
सपुत्रज्ञातिबान्धवम् VI. 41.79b
सपुत्रदाराः काकुत्स्थ VII. 107.13c
,, काकुत्स्थम् VII. 109.12c
,, सामात्याः V. 13.33a
सपुत्रपशुबान्धवाः VII. 109.13b
सपुत्रपुत्रौ लोकेऽस्मिन् VII. 111.8c
सपुत्रपौत्रस्य तवाद्य युद्धे VI. 59.129d
सपुत्रपौत्रं सामात्यम् I. 15.28c
सपुत्रपौत्रः सगणः I. 1.99c
सपुत्रबलवाहनम् VI. 41.7b
सपुत्रबलवाहनः VII. 81.7b
सपुत्रबान्धवं हत्वा V. 35.79a
सपुत्रबान्धवामात्यः VI. 124.14a
स पुत्रमेकं राज्याय I. 55.11a
,, पुत्रया त्वयाऽनैव II. 14.17a
सपुत्रराज्यां सिद्धार्थाम् III. 58.8a
स पुत्रवधसंतप्तः VI. 92.19a
,, ,, ,, ,, 32a
,, पुत्रसहितं तात I. 61.11a
सपुत्रस्य सराज्यस्य III. 41.2c
सपुत्रं तमिहानय I. 13.24d
,, ,, ,, ,, 25d
,, मूर्ध्न्युपाघ्राय I. 22.3a

समरे विमलैः शस्त्रैः VII. 27.39c
,, शक्ष्यसे नृप IV. 11.68d
समरेष्वनिवर्तिनः III. 26.2b
,, VI. 53.20d
समरेष्वनिवर्तिनाम् III. 22.8d
,, IV. 16.3b
,, ,, 19.21d
,, VI. 54.7b
,, VII. 27.37d
समरेष्वनिवर्तिनोः VII. 22.16d
,, ,, 27.45d
समरेष्वनिवर्तिनौ VI. 58.48b
समरेष्वभिपालकः III. 38.9d
समरे सत्यविक्रमः IV. 66.27d
,, सर्वराक्षसान् VI. 86.12d
,, सशिलायुधाः VI. 73.39d
,, संनिपातितौ VI. 71.2b
,, सूर्यवर्चसा VI. 111.82d
,, हन्तुमर्हथ VI. 93.4b
,, हन्तुमात्मानम् VI. 106.10c
,, हरियूथपाः VI. 90.89b
समर्चयित्वा स निशाचरो जगौ VII. 31.44c
[illegible] V. 47.7d
समर्थयामास तदा VI. 32.41c
समर्थयितुमुद्यतः VI. 12.10b
समर्थश्च निवेशने VII. 62.17d
समर्थश्चाप्यहं सेतुम् VI. 22.49a
समर्थस्तस्य निग्रहे III. 38.11b
समर्थस्त्वं रणे हन्तुम् IV. 27.36c
समर्थस्यापि सहितः II. 116.22c
समर्थं मन्यसे केन VI. 36.4c
,, वदतां वरम् VI. 17.51b
समर्थः परिरक्षितुम् VI. 41.35d
,, समरे हन्तुम् IV. 12.8c
समर्था गगने गन्तुम् VI. 34.6a
समर्थाधिष्ठितश्चाश्वः I. 8.15a
,, ,, 12.15c
समर्थान्यस्य चिन्तय IV. 21.4d
समर्थान्संप्रगृह्णन्ति II. 26.36c
समर्था बलिनश्चैव IV. 25.18c
,, ये च द्रष्टारः II. 80.3c
समर्थावपि तौ यन्माम् V. 38.46c
समर्था ह्यर्थसाधने IV. 65.27d
समर्थाः करणेष्विह I. 12.19d
,, साधनेष्विति I. 8.19b
समर्थेनोपसंदेष्टुम् VI. 17.33c
समर्थैर्मन्त्रनिर्णये VI. 6.7b
समर्थौ गतिमन्वेतुम् VI. 34.4c
,, नारिम ते दातुम् IV. 11.11a
समर्थोऽपि निरर्थकः III. 33.19d
समर्थौ वानराधिपः IV. 4.15d
,, ह्यसि राक्षस III. 36.15d
,, ,, वीर्येण VI. 37.23c
समर्थौ सहितौ यन्माम् V. 67.24a
समर्थ्यं चात्यर्थविशारदावुभौ III. 4.30c
समर्पयामास वधाय रावणः III. 46.37d
समवायांश्च कुर्वते VI. 35.27d
समवाये नरेन्द्राणाम् II. 118.41c
समवीर्यसमन्वितम् VII. 74.13d
समवेक्ष्य नयानयौ II. 78.4b
,, परस्परम् VI. 57.13d
,, महीपतिः II. 34.14b
,, वनौकसाम् VI. 41.96b
समवेक्ष्याब्रवीद्वाक्यम् I. 16.16a
समवेता महीपतिम् II. 15.13d
,, यथाविधि I. 15.4d
समवेताश्च दृश्यन्ते VI. 10.19c
समवेताः समन्ततः IV. 42.21d
,, ,, VI. 54.4d
,, समर्थयन् VI. 37.3d

समाह्वये त्वां समरे VI. 87.9c
स मां किं नाभिपद्यते V. 26.12d
,, ,, जिघांसुर्दुष्टात्मा IV. 46.11a
,, ,, दृष्ट्वा नरपतिः II. 118.29a
,, ,, ,, महाबाहुः V. 38.24a
,, मां भरतपूर्वजः V. 26.35b
समांश्चक्रुः समन्ततः II. 80.9d
समाः किल चतुर्दश II. 90.12d
,, शिखरिणः स्निग्धाः III. 46.18a
,, समस्ता विदधे परंतपः II. 53.34c
समित्कुशपवित्राणि II. 25.7a
समित्पुष्पकुशोदकम् III. 15.5d
समित्रगणबान्धवम् VI. 124.8b
समित्रबन्धुः सामात्यः III. 51.25a
समित्रबान्धवं हत्वा V. 35.47c
समिद्धमरणीसुतम् V. 13.39d
समिद्धं जातवेदसम् IV. 26.30b
समिद्धे जातवेदसि II. 56.26d
समिद्भिस्तोयकलशैः III. 1.5a
समिधश्च हुताशनः II. 14.39b
समिधश्चैव सर्षपान् II. 25.28b
समिधः पूर्णकुम्भांश्च II. 20.18c
समिधोऽथ विनीतकाः VI. 73.20b
,, ,, ,, 80.7b
समीकर्तुं महाहवे VI. 65.8d
समीकुरुत निम्नानि VI. 127.6c
समीकृततलां रम्याम् III. 15.23a
समीक्षते मां प्रमुखोऽग्रतःस्थितः V. 47.28b
समीक्षमाणः परमाद्भुतश्रीः VI. 73.63c
,, पुनरेव लङ्काम् V. 53.40b
,, पुष्पाढ्यम् III. 75.11c
,, सहसा जगाम VI. 74.48c
समीक्षमाणां रुदतीमनिन्दिताम् V. 19.22a
समीक्षमाणो भवनम् V. 6.3c
समीक्षितात्मा समवेक्षितार्थः V. 1.199d
समीक्षिता धर्मफलोदयेषु II. 21.57b
समीक्ष्यकारी विनिवृत्तचेष्टः V. 48.45b
समीक्ष्य कालं पुनरास्तिकोऽभवम् II. 109.38c
,, कुब्जां भरतस्य माता II. 78.26b
,, [illegible] V. 61.20c
,, च महाबाहो V. 3.17a
,, तं राजवरात्मजं रणे V. 47.16b
,, तं संयति चित्रकार्मुकम् V. 37.66a
,, ता राक्षसराजयोषितः V. 12.4c
,, तां चार्थविपत्तिमागताम् II. 19.40b
,, तूर्णमायान्तम् VI. 40.12a
,, दुःखितो रामः III. 67.23c
,, देवाः सह सिद्धचारणैः VI. 22.84b
,, देवी शयने नरेन्द्रम् II. 42.35b
,, धर्मेण हतं बलीयसा III. 26.38b
,, नगरीं ततः V. 3.12b
,, पतितं भुवि II. 72.22b
,, पुत्रस्य विवासनं प्रति II. 13.25c
,, बुद्ध्या क्षणदाचरेश्वरः III. 33.24d
,, भद्रे सुभ्रंशं विषण्णः II. 63.53d
,, भरतो वाक्यम् VI. 127.22c
,, राघवो हृष्टः VI. 99.14c
,, रामं पुनरीत्युवाच II. 21.51d
,, ,, रविसंनिकाशम् IV. 17.54c
,, रावणो बुद्ध्या VI. 92.19c
,, ,, ,, ,, ,, 32c
,, विजितारिं च VI. 124.8c
,, विमलं व्योम IV. 29.1a
,, वृद्धास्तरुणाश्च मानवाः II. 57.34b
,, व्यथिता भूमौ IV. 19.26c
,, व्यथितेन्द्रियः II. 42.5d
,, समितिंजयः VI. 12.1b
,, लङ्कां गिरिवर्यमूर्ध्नि V. 1.27b
,, सह भार्याभिः II. 39.1c
,, सौमित्रिरुवाच दीनम् IV. 30.15d

सिताभ्रशिखरानेषु II. 6.11a
सिताभ्रसदृशैश्चित्रैः V. 4.7c
[illegible] III. 42.16b
सिताः पीतमुखाः शराः V. 46.22d
सिद्धगन्धर्वचारणान् I. 49.1d
सिद्धगन्धर्वचारणाः VI. 100.55d
सिद्धगन्धर्वयक्षाश्च I. 15.25a
सिद्धगन्धर्वसेवितम् V. 58.167b
सिद्धचारणकिंनराः I. 76.10b
सिद्धचारणदेवताः VII. 32.65b
सिद्धचारणसङ्घैश्च IV. 41.22c
सिद्धचारणसेवितम् I. 51.23d
,, IV. 40.33d
सिद्धचारणसेवितः IV. 41.28d
सिद्धचारणसेविते I. 48.33d
सिद्धविद्याधरोरगाः I. 17.9b
,, ,, ,, 22b
सिद्धस्य विधिवत्तदा I. 14.15d
सिद्धः शोणितविस्रवैः VII. 21.38b
,, सिद्धाश्रमादहम् I. 31.15b
सिद्धानामपि साध्यानाम् VI. 117.19a
सिद्धानां च गतौ सौम्य VII. 41.14c
सिद्धान्प्रत्यानयन्ति च IV. 43.38b
सिद्धार्थश्च समाहिताः VI. 128.24b
सिद्धार्थश्चार्थसाधकः VI. 127.11b
सिद्धार्थं शंस मां तस्मै VI. 125.7c
सिद्धार्थः खलु सूत त्वम् II. 58.10a
,, ,, सौमित्रिः II. 98.8a
,, सन्निवर्तस्व I. 41.4c
सिद्धार्था खलु कौसल्या VI. 119.18a
,, ,, वैदेही II. 88.21a
,, राघवेण ह V. 57.47b
,, व्यवहारिणः II. 67.16b
सिद्धार्थास्तु नरा रामम् II. 72.38a
सिद्धार्था हृष्टमानसाः V. 60.10d
सिद्धार्थाः खलु ते राम VI. 119.19a
,, पितरं वृत्तम् II. 51.20a
,, ,, ,, ,, 86.18a
सिद्धार्थाः संनिवर्तस्व IV. 40.70c
,, सुखिनो वयम् IV. 64.17d
सिद्धार्थो नाम नामतः II. 36.18b
सिद्धा वैखानसा यत्र IV. 43.32a
सिद्धाश्रम इति ख्यातः I. 29.4a
सिद्धाश्रमनिवासं च I. 50.23a
सिद्धाश्रमनिवासिनः I. 29.26b
,, ,, 31.18b
सिद्धाश्रममनुत्तमम् I. 29.24b
सिद्धाश्रममनुप्राप्तः I. 34.12c
सिद्धाश्रममिदं सत्यम् I. 30.26b
सिद्धाश्रमोऽयं सिद्धः स्यात् I. 29.29c
सिद्धाश्च परमर्षयः I. 15.4b
,, ,, III. 11.89b
,, ,, ,, 25.15d
,, ,, V. 1.129d
,, ,, ,, 1.137b
,, ,, ,, 26.37b
,, ,, ,, 54.50b
,, ,, VI. 22.71b
,, ,, ,, 93.35b
,, ,, ,, 102.31b
,, ,, ,, 106.19b
,, ,, ,, 107.48b
,, ,, ,, 119.29b
,, ,, VII. 22.17b
,, ,, ,, 111.3b
,, सह चारणैः III. 23.27b
,, ,, ,, ,, 24.19b
सिद्धांश्च ऋषिसत्तमान् I. 15.22d
सिद्धिप्रत्ययकारकः IV. 63.13b
सिद्धिमग्निश्च वायुश्च V. 13.63c

सुग्रीवं क्लिन्नवाससम् IV. 26.1b
,, गगने पूर्णम् IV. 34.4c
,, गतचेतसम् IV. 25.12d
,, च महाकपिम् VI. 100.45d
,, ,, महाबलम् VI. 55.4b
,, ,, ,, ,, 63.49b
,, ,, महावीर्यम् VI. 122.13c
,, ,, वधिष्यामि VI. 81.27c
,, ,, वनौकसम् IV. 64.18d
,, ,, सलक्ष्मणम् VI. 9.6b
,, ,, ,, ,, 112.24b
,, ,, सहामात्यम् V. 39.8a
,, ,, ,, ,, 40.22c
,, ,, ,, ,, 67.41c
,, ,, हरीश्वरम् VI. 19.34d
,, चाभिषेचितम् VI. 17.66d
,, चाभ्यवादयत् V. 64.1d
,, चाभिनै[illegible]न् V. 34.38b
,, चैव निन्दन्त : IV. 55.18c
,, जनयामास I. 17.10c
,, जहि संभ्रमम् IV. 16.7b
,, तमिहागतम् IV. 15.13b
,, तं महाबलम् III. 72.17b
,, तांश्च वानरान् VI. 84.6b
,, ताश्च संप्रेक्ष्य VI. 17.11c
,, ते पुरस्कृत्य VII. 108.18a
,, नाथमिच्छति IV. 4.18d
,, नाम वानरम् V. 30.11b
,, परिषस्वजे VI. 112.7b
,, पर्यवस्थितम् IV. 16.16b
,, पवनात्मजे V. 64.44b
,, पुनरब्रवीत् IV. 11.86b
,, पुरतः कृत्वा VI. 4.34c
,, प्रति लक्ष्मणः IV. 31.17b
,, प्रत्यनन्तरम् VI. 93.36b

सुग्रीवं प्रहसन्निव IV. 5.25b
,, ,, ,, 8.20d
,, ,, ,, 10.31d
,, प्रियदर्शनम् IV. 8.10b
,, ,, ,, 12.12b
,, ,, V. 35.26b
,, प्रियवादिनम् IV. 6.13b
,, प्लवगेश्वर IV. 25.45d
,, प्लवगेश्वरम् IV. 3.37d
,, ,, ,, 22.2b
,, ,, VI. 63.38d
,, ब्रूहि गत्वाशु VI. 20.9a
,, भयमाविशत् VI. 46.29d
,, भीमविक्रमम् VI. 29.2d
,, मनसा गतः IV. 4.1d
,, मैथिलीं विना V. 13.36d
,, रणकोविदम् IV. 16.19b
,, राघवानुजः VI. 128.48b
,, रामलक्ष्मणौ III. 74.2d
,, लक्ष्मणाग्रजः V. 35.33d
,, वचनान्मम IV. 30.70d
,, वर्धयामास VI. 50.7c
,, वाक्यकोविदः IV. 2.13d
,, वानरर्षभम् III. 75.8d
,, ,, IV. 26.22d
,, ,, V. 63.13b
,, ,, VI. 127.45b
,, वानरेन्द्रं तु IV. 4.23c
,, वानरेश्वरम् IV. 16.31b
,, वानरैः सह VI. 53.3d
,, शत्रुसूदनः IV. 14.8b
,, शरणं गतः IV. 4.19d
,, ,, ,, ,, ,, 20d
,, शरणं गतौ IV. 4.17d
,, सत्यसंगरम् V. 35.26d

सुग्रीवः स्थापितो राज्ये V. 51.10c
,, ,, ,, VI. 126.39a
,, स्वर्गते मयि IV. 17.52b
सुग्रीवादपकर्षितुम् IV. 54.11d
सुग्रीवानुचरांश्चापि IV. 33.24c
सुग्रीवाभिमुखा वीराः VI. 99.50c
सुग्रीवाय च तत्सर्वम् I. 1.59c
,, ,, मारुतिः V. 13.58b
,, ददौ राज्ञे VII. 39.13c
,, निवेद्य VI. 128.45d
,, न्यवेदयत् V. 35.35b
,, न्यवेदयन् IV. 39.41d
,, महात्मने V. 31.12b
,, ,, ,, 35.31d
,, ,, VII. 91.9d
,, महोदरः VI. 97.20d
,, स्रजं दिव्याम् VI. 128.76a
,, समाहिता IV. 35.12b
सुग्रीवे च सलक्ष्मणे IV. 57.19b
,, चाङ्गदे चैव IV. 18.53a
,, ,, राजन् IV. 18.54c
सुग्रीवेण कृते स्वयम् IV. 53.13b
,, च ते सख्यम् VI. 124.12a
,, ,, मे सख्यम् VI. 124.12a
,, ,, वाहिनी VI. 25.32d
,, ,, ,, ,, 41.57b
,, ,, संगतः V. 51.8d
,, ,, संप्रीतिम् IV. 15.25a
,, ,, संवादम् VI. 125.8c
,, ततः सार्धम् IV. 25.49a
,, तु निःशङ्कम् IV. 16.23a
,, नरोत्तम IV. 33.59b
,, निपातितम् VI. 77.1b
,, नृशंसेन IV. 10.25c
,, पुरा यथा IV. 35.21b

सुग्रीवेण प्रभग्नेषु VI. 96.13c
,, महागजः VI. 96.19b
,, महात्मना IV. 3.21b
,, ,, ,, 49.14b
,, ,, IV. 52.22b
,, ,, ,, 57.12b
,, ,, V. 63.4b
,, ,, VI. 51.8d
,, ,, ,, 75.42b
,, ,, ,, 126.40b
,, महौजसः V. 35.53b
,, यथोद्दिष्टम् IV. 48.1c
,, विशेषतः IV. 35.17d
,, समन्वितः VI. 22.80b
,, समं त्वस्य VII. 36.39a
,, समाख्याताः IV. 47.3a
,, समागमम् I. 3.23b
,, समागतः I. 1.59b
,, ,, ,, ,, 69b
,, ,, IV. 17.20d
,, ,, VI. 123.39d
,, ,, ,, 126.36b
,, समागम्य IV. 39.42c
,, समीक्ष्याथ VI. 98.1c
,, समुद्यतम् VI. 96.28d
,, स राघवः IV. 7.15b
,, ,, ,, ,, 14.7d
,, सह प्रभुः V. 58.140b
,, ,, भ्रात्रा IV. 18.58a
,, सहानघः IV. 27.5b
सुग्रीवेणापि पालिताः VI. 4.25d
सुग्रीवेणाभिपालिता VI. 4.107b
सुग्रीवेणाभिपालिताम् VI. 20.1b
सुग्रीवेणाभिपालिताः VI. 4.69b
सुग्रीवेणाभिषेचितः IV. 53.17d

सुषेणः सहजाम्बवान् VI. 41.44d
,, सहदायादः VI. 37.2c
,, सुमहाद्युतिः VI. 101.43d
सुषेणेन महात्मना VI. 123.7b
सुषेणो जाम्बवांश्चैव VI. 4.34a
,, राघवं वचः VI. 101.28d
,, वाक्यमब्रवीत् VI. 50.26b
,, वानरश्रेष्ठः VI. 101.41c
,, वानरोत्तमः VI. 43.36b
,, हरिपुङ्गवः VI. 43.38b
,, ह्येवमब्रवीत् VI. 101.34d
सुसमृद्धां गुहां दिव्याम् IV. 26.10c
सुसंततान्वज्रसमानवेगान् V. 48.28d
सुसंत्रस्ता समाक्रन्दत् III. 52.5c
सुसंधिरुदपद्यत I. 70.26b
,, II. 110.14b
सुसंधेरपि पुत्रौ द्वौ I. 70.26c
,, ,, ,, II. 110.14c
सुसंपन्ना महात्मनः VII. 84.8b
सुसंपूर्णं प्लवंगमैः VI. 26.7b
सुसंप्रहृष्टः परिगृह्य मैथिलीम् III. 54.30b
सुसंमृष्टाजिरं सदा III. 1.3b
सुसंरब्धं तु भरतम् II. 97.1a
सुसंवीतमवष्टब्धम् IV. 16.15c
सुसंवृतं पार्थिवलक्षणैश्च IV. 24.28a
सुसंवृता गच्छतु राजपुत्री II. 37.36b
सुसंवृतो मन्त्रिधुरैः II. 100.16c
सुसंहृष्टः परिष्वज्य III. 15.27a
सुसंहृष्टा वनौकसः V. 61.15b
सुसुखे हि बहुद्रव्ये IV. 27.30a
सुसूक्ष्ममपि दृश्यते VII. 109.22b
,, लक्ष्यते II. 60.8b
सुसूक्ष्मोऽपि न शक्यते II. 62.16d
सुस्कन्धविटपैः शैलैः VI. 82.19a
सुस्तम्भां मस्करैर्दीर्घैः III. 15.21c

सुस्थितेन च चेतसा I. 14.34b
सुस्थितै[illegible] II. 73.27d
सुस्निग्धहयनिःस्वनः II. 114.21b
सुस्निग्धं पावकाग्रतः VII. 34.40d
सुस्वरं भैरवस्वना III. 17.10d
,, योषितस्तदा II. 81.8d
सुस्वागतं वाचमुदीरयाणः V. 27.46c
सुस्राव तीव्रं रुधिरं भृशोष्णम् VI. 69.92b
,, धात्वम्भ इवाद्रिराजः VI. 70.62d
,, नयनैः स्त्रीणाम् II. 40.35a
,, रुधिरं तीव्रम् VI. 71.81c
,, रुधिरं बहु VI. 45.9b
,, ,, ,, ,, 70.56d
,, ,, महत् VI. 70.16b
सुस्रुवुर्गिरिधातुभ्यः II. 63.19c
सुहृस्तानां गतिर्गता VI. 109.6d
सुहुत इव मखेऽग्निराज्यसिक्तः I. 20.28c
सुहुतेन सुयज्ञेन VII. 83.6c
सुहुतोऽग्निरिवाबभौ VI. 65.28d
सुहोत्रश्च महाकपिः IV. 54.10d
सुहोत्रं च शरारिं च IV. 41.3a
सुहृच्चिह्नममित्रकम् VI. 65.7d
सुहृच्चैव च भर्ता च IV. 23.11c
सुहृज्जनपरिक्लेशः VI. 116.13c
सुहृज्जनस्य [illegible] II. 19.40d
सुहृदश्च मदीया ये IV. 8.33c
सुहृदश्चानुपश्यति VI. 63.8d
सुहृदश्चाप्रमत्तास्त्वाम् II. 4.24a
सुहृदस्तत्पर्यन्कामैः II. 106.28c
सुहृदस्तेऽभिषेचने II. 106.29b
सुहृदं त्वां समासाद्य IV. 12.10c
,, नोपलक्षये II. 52.22b
,, भ्रातरं प्रियम् II. 22.2b
,, संप्रहर्षय IV. 26.18b
सुहृदात्तोऽर्थवित्तमः IV. 40.15d

हनूमन्तमभिद्रवत् VI. 52.33d
हनूमन्तमभिप्रेक्ष्य VI. 56.24c
हनूमन्तमभिप्रेत्य V. 48.21c
हनूमन्तमवस्थितम् IV. 21.12d
,, VI. 56.11b
हनूमन्तमवाकिरन् VI. 86.20d
हनूमन्तमवैक्षत V. 64.45d
हनूमन्तमिदं वचः VI. 75.1d
हनूमन्तमिहागतम् V. 58.98b
हनूमन्तमुवाच ह IV. 2.19d
,, ,, VI. 81.31b
हनूमन्तमुवाचेदम् V. 37.1c
,, VI. 113.36a
,, ,, 125.41c
हनूमन्तं कपिं व्यक्तम् V. 35.86a
,, कृतात्मानम् VI. 1.14c
,, च नृपतिः VII. 39.16a
,, ,, मां विद्धि V. 35.51c
,, ,, रक्षोघ्नम् VI. 63.49c
,, ,, लक्ष्मणः VI. 91.3d
,, ,, वानरम् IV. 42.2b
,, ,, ,, V. 64.25d
,, ,, ,, ,, ,, 40d
,, ,, ,, VI. 93.36d
,, ,, विक्रान्तम् VI. 29.3c
,, ,, वीर्यवान् VI. 91.2b
,, ,, संक्रुद्धः VI. 70.32c
,, ,, सुग्रीवम् VI. 73.58a
,, जिघांसति VI. 86.33d
,, जिघांसन्तम् VI. 86.32a
,, त्वमारोह VI. 22.78a
,, दिदृक्षवः V. 57.25d
,, द्रुमाश्रितम् V. 33.14d
,, प्लवंगमम् VI. 112.22d
,, ,, ,, 125.2d

हनूमन्तं महाकपिम् V. 44.6b
,, ,, VI. 59.124b
,, ,, ,, 121.2[illegible]b
,, महात्मानम् V. 57.31c
,, महाबलम् IV. 67.2d
,, ,, VI. 59.67d
,, ,, ,, 77.17d
,, ,, ,, ,, 18d
,, ,, ,, 113.5b
,, महाबाहुः VI. 1.19c
,, महावेगम् V. 61.4c
,, वरासनात् VII. 40.20b
,, व्यसर्जयत् I. 1.87d
,, स जाम्बवान् VI. 74.26b
,, ,, लक्ष्मणः IV. 4.30b
,, स्तनान्तरे VI. 43.21d
,, हरिश्रेष्ठम् VI. 81.25c
हनूमन्दूरमध्वानम् V. 37.31a
हनूमन्नङ्गदं प्रति IV. 21.15b
हनूमन्मम वृत्तान्तम् V. 58.106c
हनूमन्यत्नमास्थाय V. 39.5a
[illegible] V. 40.22a
,, ,, 67.41a
हनूमन्हरिराजस्य IV. 66.3a
हनूमाञ्जनकात्मजाम् V. 17.19b
हनूमाञ्जाम्बवानपि IV. 50.6b
हनूमाञ्जाम्बवान्नलः VI. 41.27b
हनूमाञ्जाम्बवांस्तथा IV. 26.35d
,, VI. 128.85b
हनूमाञ्छत्रुसैन्यानाम् V. 42.34c
,, ,, 43.9c
हनूमाञ्छरवृष्टिभिः V. 45.8b
हनूमाञ्छिखरं गिरेः VI. 101.38d
हनूमानग्रतः स्थितम् V. 1.100b
हनूमानङ्गदस्तथा VI. 61.37b

Addendum et corrigendum

Page

176 Read कबिने for कबिन in III. 74.9b
179 Read दुःखं for दुखं in II. 61.3d
182 Add after [illegible] — [illegible] यदि जानीषे III. 60.12c
184 Read कं for कं in II. 48.22c
185 Read कपिराजस्य तन्मुखम् for [illegible]
189 Read कर्म for कर्न in II. 109.28b
191 Read कर्मणां and दुष्कृतैः स्वकैः for कमेणां and दुष्कृतैः स्वकैः in VI. 63.7b
and VII. 21.21d respy.
197 Read काञ्चनेन and [illegible]- for काञ्चनेन and कार्तस्वर-in VI. 39.20e
and VI. 128.10b respy.
198 Read एवार्थधर्माभ्याम् for एवार्थ धर्माभ्याम् in II. 53.9c
199 Read वीर्यनिर्जितम् for [illegible] in VII. 15.40b
200 Read °दभिजगाम and [illegible] for °दभि जगाम and [illegible] in
II. 92.1d and IV. 33.56b respy.
201 Read °रूपनादिभिः for °पनादिभिः in V. 15.27b
206 Read काञ्चनभ्रमरा° for कावनभ्रमरा° in IV. 50.33a
210 Read तत्कारणं for तद्कारणं in IV. 33.32a
212 Add after किमन्यमनुशोचसि—किमप्रियं पश्यसि [illegible] II. 12.101c
220 Read कुम्भस्तौ for कुभस्तौ in VI. 76.36b
222 Read कुरुणासु° for करुणासु° in IV. 43.56b
233 Read कृमिभिर् for कृमिमिर् in VII. 21.13a
240 Read °यत्तीव्रम् for °यत्नीव्रम् in VI. 100 18c
241 Read ह्यर्थः for ह्यर्थः in VII. 105.4b
246 Read कुद्दानां for कुद्धानां in VI. 95.49d
253 Add after क्षमस्व [illegible] मासांश्चतुरो मया सह IV. 27.48b
and Read °वाविध्य लाङ्गू° for °वाविध्यालङ्गू° in V. 42.30c
257 Read क्षोभयामास for क्षोभयासास in VI. 98.2b
261 Read मातुलकुलम् for मातुल कुलम् in II. 1.1a
263 Add after गच्छैनं राक्षसं [illegible]—[illegible] VII. 81.22f
274 Read गामर्घ्यमुदकं for गामर्घ्यमुदकं in II. 54.17d
278 Add after [illegible]—[illegible] II. 111.30b

Page

282 Read गृहदेवताः for गुहदेवताः in II. 11.15b

289 Add after चक्रहस्तो यथा विष्णुः—चक्रं यथा विष्णुकराग्रमुक्तम् VI. 74.48d

290 Read चक्रुः for चक्रु in VI. 58.18d

291 Read °तेव सा द्यौः for °तेव सा in VI. 77.24c

292 Read चतुरो for हतुरो in VII. 86.13c

296 Read कामरूपिणा for क. मरूपिणा in V. 35.75d

299 Add after चिक्षेप बहुधा भूमौ-चिक्षेप रजनीचरः VI. 97.20b

303 Read प्रतिलभ्य for ग्रतिलभ्य in V. 32.8c

309 Read जगाम for जगाग in I. 49.22d

313 Add after जज्वाल च पुनः पुनः–जज्वाल भूमौ स रघुप्रवीरः VI. 59.108b

325 Read निःसरन्तीम् for निः सरन्तीम् in III. 43.28c

332 Add after तच्चापि जानामि तथाविषह्यम्—तच्चापि जानामि यदत्र कार्यम् IV. 33.53d

334 Add after तत [illegible]—ततश्चतुर्महात्मानौ VI. 88.59a

345 Add after ततस्तु राजानमुदीक्ष्य दीनम्—ततस्तु राजा प्रतिवीक्ष्य ताः स्त्रियः I. 16.32a

350 Read VI. 106.19a for 106.19a and Add after ततो देवाः सगन्धर्वाः —ततो देवाः सगन्धर्वाः VII. 15.6a

354 Read ततो वर्धितु° for ततोवर्धितु° in V. 37.36c

364 Add after तथा कुर्वन्महारथाः—तथा क्रुद्धं दशग्रीवम् III. 31.8a

368 Add after तथा शय्यागृहाणि च and तथा सर्वप्रजाकान्तैः—तथा शापं च वालिनः IV. 11.61b and तथा सर्वं समादधे V. 30.43d respy. and Add तथास्तु मुनिपुंगव I. 52.19d after तथास्तरणमुख्येषु.

373 Add after तदा दत्तौ महीपते—तदा ददृशतुर्मृगम् III. 43.4d

376 Read तदेकवासः for तदेकबासः in V. 58.57c

378 Read तद्भयाच्च for तद्भयाच्च in IV. 10.27c

379 Add after तद्युद्धं रामरावणम्—तद्युद्धं लोमहर्षणम् VI. 79.2b

390 Add after तमुत्पतन्तं समभिद्रवद्बली—तमुत्पातकृतोत्साहम् V. 40.20c

392 Read दुःखितं and शोकसंतप्तम् for दुखितं and शोकसंतमम् in II. 105.14a and II. 76.1a respy. and शब्दो for शद्बो in II. 118.49c and I.67.18a.

406 Read ब्रुवाणस्य IV. 12.28a for ब्रवाणस्य IV. 12.29a

408 Add after तस्य दर्शनजः शोकः—तस्य दण्डो वधः स्मृतः IV. 18.23b

410 Read भूमौ for भूमौ in II. 50.49a

411 Read शब्दं and शब्दस्य for शद्बं and शद्बस्य in VII. 72.2a and I 24.5d respy.

Page

420 Add after [illegible]—[illegible] पुरीं [illegible] VI. 128.33d
433 Read तुहुदु° for तुहुबु° in VI. 44.29c and VII. 37.3c.
448 Add after [illegible] निशाचरः VI. 79.4b
453 Add after त्वद्धस्तानि [illegible] निरवद्यता III. 21.16b
462 Add after त्वद्विधं मदसैन्यम्—[illegible] न तु [illegible] V. 21.23c
480 Read दृढमुक्ता for पद्गमुक्ता in VI. 116.30a and Add after दर्शी [illegible]—दर्शी शूर्पणखा नाम VII. 12.2c
539 Read [illegible] for धैर्यादिनानि in V. 28.19b
540 Read ध्रुवः and ध्वजिनः for ध्रुवः and ध्वजिनः in VII. 30.35b and V. 4.20c respy.
542 Read नक्षत्र° for तक्षत्र° in I. 34.16c
558 Add after न भूम्या कार्यमस्माकम्—न भूयः क्लेशमाप्नुयात् VII. 62.15b
560 Read दुःखं for दुखं in VI. 5.5a
577 Read नानाकुसुम and नानाविभ्यः for नाना कुसुम and नाना विभ्यः in II. 80.14b and II. 12.64d respy.
580 Add after [illegible]—[illegible] दोषो भवेदत्र III. 7.19a
600 Add after निर्वीर्यो जामदग्न्योऽसौ and निर्वैरा हि [illegible]—[illegible] दिवसे II. 54.4c and निर्वैरं क्रियते मोहात् II. 9.9c respy.
641 Read पर्वतेन्द्रं for पर्वतन्द्रं in V. 57.13c
663 read पुत्रौ for पुत्रो in I. 66.5a and read after पुत्रौ [illegible]
668 Add after पुरा भवति नोऽदूरात्—पुरा भूत्वा मृदुर्दान्तः III. 64.4a
669 Add after पुरी चेमां सराक्षसाम्—पुरी जानपदा जनाः II. 6.26d
670 Add after पुरे वा दुर्मतिर्नरः—[illegible] VI. 64.44d
702 Add after प्रमदाभिः समंततः—प्रमदाभिः समंततः IV. 33.65b
739 Add after बभूव मदमत्तश्च—बभूव [illegible] II. 10.8d
762 Add after भङ्क्त्वा [illegible]—[illegible] वनं पादपरत्नमालिनीम् V. 54.43a
784 Read भीमकर्मा for मीमकर्मा in V. 1.93d
786 Read भुञ्जाना and °निकायार्थैः for भुञ्जाना and °निकायार्थैः in V. 33.17c and VI. 74.47b
802 Read ब्रूत for व्रत in VII. 95.3c
828 Read मूढवाता for मूढमूवाता in V. 28.8d
832 Read महोदरोऽयं for महादरोऽयं in VI. 65.10a
833 Read महोष्ट्रहनु° for महो ष्ट्रहनु° in V. 35.19c
844 Read मासं for नासं in VII. 89.22a

Page

852	Read सुरचीपत्तनं for सुरचीपतनं in IV.42.13c
855	Read मूर्ध्नि and मूर्ध्न्यु° for मूर्न्ि and मूर्ध्नु° in II. 26.13c and II. 39.19d respy.
857	Read मृणाली पङ्क° for मृणालीनङ्क° in V. 17.25e
864	Read मोहोन्मत्तस्य and दशग्रीवः for मोहन्मत्तस्य and दशाग्रीवः in VII. 80.7b and VII. 22.44c
865	Read दैत्यस्वरूपी and महच्छूलम् for दैत्यस्व रूपी and महाच्छूलम् in VII. 15.31c and VII. 63.25a respy.
923	Read °न्मथितसा° for °न्मथित सा° in VI. 89.52b
938	Read शुकसारणौ for शुखकारणौ in VI. 25.26b
954	Add after राज्ञा च पृथिवीश्वराः—राज्ञा चैव विशेषतः in I. 11.31b
1008	Read वक्ष्यामि तं for वक्ष्यामि वी तं in III. 71.32c
1011	Read वज्रे for वजं in III. 12.36d and Add after वज्रे विष्टम्भितं येन—वज्रा इव महागिरीन् VI. 89.4d
1036	Read वाञ्छितं for वञ्छितं in VII. 16.42e
1102	Read °स्वस्तिकलक्षणैः for °स्वस्तिकलत्तणैः in V. 1.19b
1108	read शकुनाः for शकूनाः VI. 51.31b
1139	Add after शुश्राव राघवः सर्वम्—शुश्राव राजमार्गस्थः II. 16.42a
1152	Add after श्रुतपूर्वा यदि त्वया—श्रुतमेतन्मया पुरा I. 69.14d
1173	Add after स तु सिंहवृषस्कन्धः—स तु सीतां विचेष्टन्तीम् III. 54.11c
1176	Read सत्यवादी for सत्यवादी in II. 13.3b
1198	Read समुज्ज्वल° for समुज्ज्षल° in V. 54.42b
1201	Add after समूलांश्च विमूलांश्च—समुद्धृत्ते कथंचन I. 67.4d
1217	Read सर्वावस्थासु in सर्वास्थासु in II. 105.35d
1231	Read सह तैर्नै° for सह तेनै° in VI. 128.90b
1235	Add after सहिताः पर्यवारयन्—सहिताः पुत्रपौत्रैश्च I. 6.18c
1249	Read संसाद्य° for संसद्य° in VI. 59.94d
1265	Add after सिध्यन्तु च पराक्रमाः—सिन्दुबारैः शिरीषकैः IV. 27.10b
1277	Read सुग्रीवस्य च for सुग्रीवस्य in VI. 112.2d
1278	Read तांश्च for ताश्च in VI. 17.11c
1325	Read निपातितः for निपतितः in V. 35.63d